प्रसिद्ध उड़िया कवि रमाकांत रथ का निधन

कोलकाता/नई दिल्ली : साहित्य अकादमी ने अपने महत्तर सदस्य, पूर्व अध्यक्ष एवं ओड़िया के प्रख्यात कवि रमाकांत रथ के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। अपने शोक संदेश में साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि यह जानकर दुख हुआ कि प्रतिष्ठित ओडिया कवि, विद्वान और साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष रमाकांत रथ अब हमारे बीच नहीं रहे। उनकी कविताओं ने अनगिनत पाठकों को गहराई से आत्मनिरीक्षण करने, जीवन, मृत्यु और भौतिक दुनिया से परे के जीवन अस्तित्व के बारे में जानने के साथ ही उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों को फिर से खोजन में सक्षम बनाया। 'श्री राधा' और 'सप्तम ऋतु' जैसी उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हमेशा हमारे साथ रहेंगी और पाठकों को आत्म-खोज की उनकी यात्रा में मदद करती रहेंगी। रमाकांत रथ ओड़िया कविता में विशिष्ट स्थान रखते थे, जो अपने आधुनिकतावादी और दार्शनिक दृष्टिकोण के लिए जाने जाते थे। उनके प्रशंसित कविता संग्रहों में केते दिनर (1962), संदिग्ध मृगया (1971), सप्तम ऋतु (1977), सचित्र अंधार (1982), श्री राधा (1985) और श्रेष्ठ कविता (1992) शामिल हैं। साहित्य में उनके उत्कृष्ट योगदान के सम्मान में उन्हें 2006 में भारत के तीसरे सबसे बड़े नागरिक पुरस्कार पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।